Subject - History
Degree Part I - Subsidiary
Lecture No - 30

Dr. Hem Narayan Mahto
Deptt of History
9835007357

Date- 27.4.2020

Ques:- हर्षवर्द्धन के जीवन और कार्यों की विवेचना करें।

Ans:- हर्ष का जन्म 590 ई० में हुआ था। वह प्रभाकरवर्द्धन और यशोमति का पुत्र था। हर्षवर्द्धन अत्यंत विकट परिस्थिति में गद्दी पर बैठा। हर्षवर्द्धन का बड़ा भाई राज्यवर्द्धन था। उसकी बहन राज्यश्री का विवाह कन्नौज के मौखरी शासक ग्रहवर्मन के साथ हुआ था। प्रभाकरवर्द्धन की मृत्यु के पश्चात् राज्यवर्द्धन थानेश्वर की गद्दी पर आया। उसी समय उसे खबर मिली की बंगाल के शासक शशांक और मालवा के राजा देवगुप्त ने मिलकर कन्नौज पर आक्रमण किया है तथा ग्रहवर्मन की हत्या कर राज्यश्री को कैद कर लिया है। इस दुर्घटना की खबर सुनकर राज्यवर्द्धन कन्नौज की सुरक्षा के लिए आगे बढ़ा। उसने देवगुप्त की सेना को पराजित कर दिया। परंतु शशांक ने धोखे से उसकी हत्या कर दी।

राज्यवर्द्धन की हत्या के पश्चात् 606 ई० में हर्षवर्द्धन थानेश्वर का राजा बना। राजा बनते ही उसने शशांक और देवगुप्त से बदला लेने की प्रतिज्ञा की तथा अपनी बहन की सुरक्षा के लिए वह कन्नौज की तरफ बढ़ा। मार्ग में उसे कामरूप के राजा भास्करवर्मन का दूत हंसवेग मिला, जिसने हर्षवर्द्धन के समक्ष अपने राजा की तरफ से मित्रता का प्रस्ताव रखा। जिसे हर्ष ने सहर्ष स्वीकार कर लिया। ग्रहवर्मन की हत्या के पश्चात् उसका कोई उत्तराधिकारी नहीं होने से कन्नौज के मंत्रियों एवं राज्यश्री की सहमति से, हर्ष कन्नौज का भी शासक बन गया। उसकी राजधानी अब थानेश्वर से कन्नौज चली आई। इसके साथ ही कन्नौज अब उत्तरी भारत की राजनीतिक गतिविधियों का केन्द्र बन गया।

Scanned with CamScanner

<u>हर्षवर्द्धन के राजनीतिक आदर्श</u>:- राजतंत्रात्मक व्यवस्था के अनुकूल हर्षवर्द्धन राज्य और शासन का प्रधान था। राज्य की समस्त शक्तियाँ उसी के हाथों में केन्द्रित थी। सैद्धान्तिक रूप से वह सर्वशक्तिशाली एवं निरंकुश शासक था जिसपर कोई भी संवैधानिक प्रतिबंध नहीं था; परन्तु व्यवहारतः वह प्रजावत्सल शासक था। वह सदैव जनहित के कार्यों में लगा रहता था। तथा प्रजा के कल्याण के लिए कार्य करता था। बाणभट्ट और चीनी यात्री ह्वेनसांग हर्षवर्द्धन के प्रशासनिक गुणों का उल्लेख करते हैं तथा उसके प्रशासन की प्रशंसा करते हैं। कादम्बरी और हर्षचरित तथा स्वयं हर्ष द्वारा लिखित नाटकों में राजा के आदर्शों का उल्लेख है। प्रजा के कल्याण की भावना सर्वोपरि थी। वह धर्म और दंड का समुचित व्यवहार करनेवाला, शांति व्यवस्था स्थापित करनेवाला तथा प्रजा के आध्यात्मिक कल्याण के लिए कार्य करने वाला था।

<u>साम्राज्य का संगठन</u>:- हर्ष का साम्राज्य सामंती संगठन पर आधृत था। उसके साम्राज्य में गृह राज्य, भोग राज्य, अधीनराज्य, अधीन मित्र सम्मिलित थे। हर्ष के अधीनस्थ शासक भूपाल, कुमार, लोकपाल, नृपति, नरपति, सामंत, महासामंत एवं महाराजा की उपाधि धारण करते थे। ये अधीनस्थ शासक हर्ष को कर प्रदान करते थे, सैनिकों से सहायता करते थे एवं राज दरबार में उपस्थित होते थे।

<u>सैनिक संगठन</u>:- ह्वेनसांग हर्ष की सेना को चतुरंगिणी कहता है, अर्थात इसमें पैदल, घुड़सवार, रथ और हाथी की टुकड़ियाँ थी। सेना दक्ष थी। इसमें वीर, दक्ष एवं वंशानुगत सैनिकों को रखा जाता था। वह स्वयं इसका निरीक्षण करता था तथा इसे नए अस्त्र शस्त्रों से सुसज्जित रखता था। ह्वेनसांग के अनुसार शिलादित्य (हर्ष) ने राजा

Scanned with CamScanner

बताते हैं 5000 हाथियों, 2000 घुड़सवारों और 50000 पैदल सैनिकों की सेना तैयार की, परन्तु बाद में इसकी संख्या बढ़ाकर उसने गजसेना की संख्या 60,000 तथा घुड़सवारों की संख्या 100000 कर दी।

राजस्व व्यवस्था :- राज्य को विभिन्न स्रोतों से आय प्राप्त होती थी। सबसे अधिक आमदनी जमीन से होती थी। किसानों से विभिन्न प्रकार के कर वसूले जाते थे, इनमें उद्रंग, उपरिकर, धान्य और हिरण्य सबसे अधिक महत्वपूर्ण है। तुल्यमेय, भाग, भोग, भूतप्रात आदि कर भी लिये जाते थे। भौगिक कर वसूलने वाला तथा पुस्तपाल जमीन का हिसाब रखने वाला पदाधिकारी था। बाणभट्ट के अनुसार वन भी राजकीय आय के महत्वपूर्ण स्रोत थे। अतः वनपाल वनों की सुरक्षा करता था। ह्वेनसांग का कहना है कि राजकीय आय सरकारी एवं धार्मिक कार्यों, सार्वजनिक अधिकारियों और विद्वानों को सहायता एवं पुरस्कार देने तथा दान पुण्य की मदों पर खर्च होती थी। नालंदा विश्वविद्यालय को रखने के लिए 100 गाँवों से होने वाली आय राज्य की ओर से दी जाती थी।

प्रान्तीय एवं स्थानीय शासन :- हर्ष के सीधे नियंत्रण वाले क्षेत्र को प्रशासनिक सुविधा के उद्देश्य से प्रांतों में बाँटा गया था, जो भुक्ति या देश कहलाते थे। इनका शासक सम्राट द्वारा नियुक्त होता था। वह विभिन्न नामों से जाना जाता था - उपरिक महाराज, आयुक्त, गोप्ता, भोग पति, राजस्थानीय या राष्ट्रीय। हर्षवर्धन के समय में अहिच्छत्रा, श्रावस्ती, कौशाम्बी, श्री नगर, या नगर भुक्ति एवं पुण्ड्रवर्धन भुक्तियों का उल्लेख मिलता है। मधुबन अभिलेख में कुण्डधानी विषय और बांसखेड़ा अभिलेख में अंगदीय विषय का उल्लेख है।

जनकल्याण संबंधी कार्य :- हर्षवर्द्धन के प्रशासन का उद्देश्य उसे लोकहितकारी बनाना था। ह्वेनसांग हर्ष के प्रशासन की प्रशंसा करते हुए लिखता है कि "सरकारी मांगें कम थी, परिवारों के पंजीकरण की न तो आवश्यकता थी और न जबरदस्ती बेगार ही लिए जाते थे, कर बहुत हल्के थे और बेगार न होने के कारण सभी अपने-अपने कार्यों में तथा अपनी पैतृक संपत्ति की सुरक्षा में लगे रहते थे - प्रशासन ईमानदार था, सभी लोग आपस में मिलकर रहते थे।" सम्राट जनहित के कार्यों में भी पूरी दिलचस्पी लेता था। उसने आवागमन की सुविधा के लिए सड़कों का निर्माण करवाया तथा उनकी सुरक्षा की व्यवस्था की। उसने चैत्यों, विहारों और मंदिरों तथा सरायों का निर्माण करवाया। शिक्षा और साहित्य के विकास में उसकी गहरी अभिरुचि थी। अतः विद्वानों को दान दिए गए एवं उन्हें पुरस्कृत किया गया। शिक्षण संस्थाओं, ब्राह्मणों एवं गरीबों को दान दिए गए।

साहित्य एवं शिक्षा का संरक्षण :- हर्ष एक विद्यानुरागी शासक के रूप में विख्यात है। प्रो० आर० सी० मजूमदार के अनुसार वह युद्ध एवं शांति के कार्यों में समान रूप से कुशल था। जिस कुशलता से वह तलवार पकड़ सकता था, उतनी ही कुशलता से कलम भी। वह स्वयं विद्वान था तथा विद्वानों को सम्मानित आदर देता, उन्हें दान देता तथा शैक्षणिक संस्थाओं को उदारतापूर्वक अनुदान देता था। बाणभट्ट के अनुसार हर्ष काव्य रचना में दक्ष था। हर्ष ने प्रियदर्शिका, नागानंद एवं रत्नावली नामक तीन नाटक लिखे। हर्ष का दरबार ख्यातिप्राप्त विद्वानों से भरा रहता था।

Scanned with CamScanner

हर्ष का मूल्यांकन :- (An Estimate of Harsha)

हर्षवर्द्धन सातवीं शताब्दी की भारतीय राजनीति का श्रेष्ठतम नायक था। एक कुशल योद्धा, साम्राज्य निर्माता, प्रशासक लोककल्याणकारी और विद्यानुरागी शासक के रूप में सभी उसकी प्रशंसा करते हैं। R.S. Tripathi उसकी तुलना अशोक, समुद्रगुप्त एवं अकबर से करते हैं। अनेक विद्वान उसे अंतिम हिन्दू सम्राट एवं साम्राज्य निर्माता मानते हैं। इसके विपरीत डॉ० रमेशचंद्र मजूमदार, डॉ० देवहूति इत्यादि उसे महान शासक भी मानते, अंतिम की तो बात ही अलग है। लोककल्याणकारी शासक होते हुए भी हर्ष ने वैसी प्रशासनिक व्यवस्था कायम नहीं की, जो उसके साम्राज्य को स्थायित्व प्रदान कर सके। फलतः 647 ई० में उसकी मृत्यु के साथ ही उसका साम्राज्य नष्ट हो गया। अनेक गुणों के बावजूद 'हर्ष शांति के कार्यों में जितना महान था, उतना युद्ध के कार्यों में नहीं।' वह धर्म-सहिष्णु, लोककल्याणकारी और विद्याप्रेमी शासक था, परन्तु अंतिम साम्राज्य निर्माता और कुशल प्रशासक नहीं।

Dr. Hem Narayan Mahto
Associate Professor
Deptt of History
R.N. College, Pandaul.